International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
Received: 12-02-2019; Accepted: 17-03-2019
www.educationjournal.org
Volume 4; Issue 3; May 2019; Page No. 10-14

माध्यमिक स्तर के विज्ञान एवं कला संकाय के अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि का लिंग, क्षेत्र और विद्यालय प्रकार के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन

रजनी रानी
शोधार्थिनी, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास, भारत।

सारांश
शिक्षण व्यवसाय के लिए शिक्षकों की व्यावसायिक रुचि हेतु समय–समय पर उनके अध्यापकीय ज्ञान एवं कौशलों के विकास हेतु प्रशिक्षण दिया जाता है। फिर भी अधिकाँश शिक्षक अपने कार्य में उद्देश्यहीन होते हैं। बहुत से ऐसे होते हैं जो अपने व्यवसाय के प्रति रुचि नहीं रखते और अपने कार्यों के प्रति समर्पित नहीं होते यदि कोई शिक्षक अपने शिक्षण व्यवसाय के प्रति समर्पित नहीं है तो उनका शिक्षण कार्य प्रभावित होगा। व्यक्ति की वे रुचियाँ जो किसी व्यवसाय, उत्पादक कार्य अथवा धनोपार्जन के स्रोत से सम्बन्धित होती है उन्हें व्यावसायिक रुचि कहते हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन दवारा माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक रुचिं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है जिसके लिये एस.पी. कुलश्रेष्ठ द्वारा संरचित एवं प्रमाणीकृत (वोकेशनल इन्टरेस्ट रिकार्ड) (VIR-K) का प्रयोग किया जायेगा। का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। न्यादर्श के रूप में प्रस्तुत शोध की जनसंख्या के रूप में करनाल जिले के माध्यमिक स्तर पर कार्यरत विज्ञान एवं कला संकाय के 150 अध्यापकों को लिया गया है। निष्कर्ष में पाया कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापकों की व्यावसायिक रूचि में सार्थक अन्तर पाया गया।

मूल शब्द : माध्यमिक विद्यालय, व्यावसायिक रुचि , तुलनात्मक अध्ययनं।

प्रस्तावना
बिना शिक्षा के मनुष्य के भीतर छिपे गुणों का पूर्ण रुप से प्रकाशन सम्भव नहीं है। प्राचीन वैदिक काल में मनीषियों ने शिक्षा के महत्व को प्रतिपादित करते हुए कहा है कि–"सा विद्या या विमुक्तये" अर्थात् शिक्षा वह है जो इस संसार रूपी भवसागर से मनुष्य जाति को मुक्ति प्रदान करे। उन्होनें शिक्षा को मुक्ति के साधन के रुप में प्रयुक्त किया। इसी प्रकार शिक्षा को मनुष्य का तीसरा नेत्र भी कहा गया "ज्ञानं मनुजस्य तृतीयं नेत्रं" अर्थात् ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र है इन दो नेत्रों को देखने से जो विचार जगत छूट जाता है वह ज्ञान रूपी तृतीय नेत्र से परिलक्षित होता है। हमारे देश में प्रारम्भ से ही विद्या को इतना महत्व दिया गया है कि मानव जीवन के प्रारम्भिक 25 वर्ष का सर्वश्रेष्ठ समय विद्या अर्जन को समर्पित किया गया–

"प्रथमे नार्जिता विद्या द्वितीये नार्जितं धनम् तृतीये नार्जितो धर्मः चतुर्थे किं करिष्यति"

किंतु आज के वैज्ञानिक युग में मनोवैज्ञानिक कारकों के महत्व को नकारा नहीं जा सकता क्योंकि इनकी महत्ता प्रमाणित हो चुकी है। विषयों के अध्ययन–अध्यापन में व्यावसायिक रुचि, अभिरुचि तथा अभिवृत्ति महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारक है। जिस विषय के प्रति व्यक्ति की रुचि तथा अभिवृत्ति जितनी ही धनात्मक होगी, वह विषय शिक्षण और अधिगम के लिए उतना ही रुचिकर होगा। अतः किसी भी विषय के शिक्षण के लिए आवश्यक हो जाता है कि उसकी रुचि, अभिरूचि एवं अभिवृत्ति का मापन किया जाय। समय निरन्तर चलता रहता है जो परिवर्तन का पर्याय है। समय के साथ जीने का ढंग भी बदलता रहता है। व्यक्ति के जीवन को प्रकृति सर्वाधिक प्रभावित करती है। प्रकृति व्यक्ति के शरीर, मन, विचार, आत्मा, सभ्यता, संस्कृति, मान्यताओं और रुचियों सहित सभी को प्रभावित करती है। प्रकृति प्रभाव से सभी पक्षों में परिवर्तन होता है, बल्कि वह अपने सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण से कुछ अनुभव प्राप्त करता है। यह व्यक्ति की आयु के साथ बढते जाते हैं एवं इन्हीं वस्तुओं के आधार पर व्यक्ति अपने लिये कुछ सामान्य सिद्धांतों का निर्धारण कर लेता है। शिक्षक होना बड़ी साधना है। शिक्षक वही है जो प्रसुप्त समस्याओं को जगा देता है और जिज्ञासा को जागृत कर देता है और बच्चों को उनके स्वयं के अनुसंधान के लिए साहस और अभय से भर देता है। शिक्षक ही सभ्यता का दीपक जलाए रखने में सक्षम है। हमारे देश के निर्माण में उनका योगदान बहुमूल्य रहा है। और अभी भी रह सकता है यदि वे अतीत की परम्पराओं का पालन कर मनुष्य, समाज और राष्ट्र के उत्थान पर ध्यान दें।

शिक्षक जब अपनी शिक्षा पूर्ण कर शिक्षा सम्बन्धी व्यावसायिक पाठ्य क्रम करता है तो शिक्षण की अनेक प्रक्रियाओं एवं पद्धतियों से परिचित होता है किन्तु जब वह वास्तविकता के धरातल पर शिक्षक की भूमिका में आता है तो उन पद्धतियों, प्रक्रियाओं व मौलिकताओं के लिए अधिक स्थान नहीं होता। जिससे वह हतोत्साहित हो उठता है, एवं उसकी सृजनात्मक क्षमताए कौशल आदि नकारात्मक रूप से प्रभावित होते हैं। जिससे कार्य के प्रति रुचि, उत्साह उत्सुकता आदि का ह्रास होने लगता है जिसका कार्य संतुष्टि पर प्रतिकूल प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। अतः इस तथ्य का अध्ययन किया जाना अत्यधिक आवश्यक है कि शिक्षकों का कितना वर्ग इससे प्रभावित हो रहा है जिससे उन कारणों का तुलनात्मक अध्ययनं विश्लेषण किया जा सके जो इस व्यावसायिक रुचि को प्रभावित कर रहे है।

बिंधम के अनुसार ''रूचि किसी अनुभव में संविलिन होने व इसमें संलग्न रहने की प्रवृत्ति है, जबकि विरक्ति उसके दूर जाने की प्रवृत्ति है।

गिलफोर्ड के अनुसार शब्दो में ''रूचि किसी क्रिया, वस्तु या व्यक्ति पर ध्यान देने उसके द्वारा आकर्षित होन, उसे पसंद करने तथा उससे संतुष्टि पाने की प्रवृत्ति है।''

रेमर्स, गेज व रूमेल के अनुसार ''रूचियाँ वास्तव में सुखांत व बुखांत भावनाओं, पसंद या नापसंद के व्यवहार के प्रति आकर्षण व हानिकर्षण से परीलक्षित होती है।

क्रो एवं क्रो के अनुसार– ''व्यवसायिक निर्देशन के उद्देश्यों को

ध्यान में रखकर ही व्यवसायिक निर्देशन की प्रक्रिया का संचालन किया जाता है व्यवसायिक निर्देशन की प्रक्रिया में व्यवसाय चाट, व्यवसाय विवरण, पत्रिका, वार्ताओं आदि के माध्यम से विद्यार्थी की व्यवसाय से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

मासलो "प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यवसाय से स्वंय की पूर्ति चाहता है इन आवश्यकताओं की पूर्ति जब किसी व्यवसाय से किसी व्यक्ति को हो जाती है तब उसे व्यवसायिक संतुष्टि कहा जाता है"।

शोधकर्त्री द्वारा शिक्षकों की व्यवसायिक रूचि से सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन निम्न प्रकार से किया गया है:

कुमार (2015) ने "वेल्लोर जिले में कॉलेज के छात्रों के वैज्ञानिक रुचि का उनके लिंग, संस्था के प्रकार, शैक्षिक योग्यता, जन्म क्रम के संबंध में एक अध्ययन" शीर्षक पर अध्ययन किया। इस अध्ययन के लिए वेल्लोर जिले के स्नातक और परा–स्नातक महाविद्यालय के 380 छात्रों का चयन किया गया। छात्रों के चयन के लिए यादृच्छिक नमूना तकनीक का इस्तेमाल किया गया। दत्त विश्लेषण के लिए टी–परीक्षण और एफ–परीक्षण का प्रयोग किया गया। छात्र एवं छात्राओं के वैज्ञानिक रुचि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। विभिन्न प्रकार के संस्था में अध्ययन करने वाले छात्र–छात्राओं के वैज्ञानिक रुचि में सार्थक अंतर पाया गया। स्नातक और परा–स्नातक छात्र–छात्राओं के वैज्ञानिक रुचि में सार्थक अंतर पाया गया। विभिन्न जन्मक्रम वाले छात्र–छात्राओं के वैज्ञानिक रुचि में सार्थक अंतर पाया गया। पटेल (2012) ने "माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के वैज्ञानिक दृष्टिकोंण और रुचि का कुछ चरों के संबंध में एक अध्ययन" शीर्षक पर अध्ययन किया। इस अध्ययन के लिए अहमदाबाद जिले के माध्यमिक विद्यालयों से कक्षा 8, 9 एवं 10 के 960 छात्रों का चयन किया गया जिसमें 480 लड़कियाँ और 480 लड़के थे। अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का इस्तेमाल किया और दत्त विश्लेषण के लिए टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन के परिणाम से पता चलता है कि लड़कों की तुलना में लड़कियों की विज्ञान में रूचि उच्च है। विद्यार्थियों के कक्षा का उनके विज्ञान रुचि पर प्रभाव नहीं पाया गया। इस अध्ययन में यह भी पाया गया कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण का स्तर लड़कों की तुलना में लड़कियों में उच्च है। आठवीं के छात्रों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण निम्न जबकि कक्षा दस के छात्रों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण उच्च पाया गया। औसत वैज्ञानिक दृष्टिकोण के प्राप्तांक पर लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। गोयल, उपविजय (2012) ने छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। डोनगांवकर, निशा (2010) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का उनकी व्यावसायिक अभिरुचि के संदर्भ में अध्ययन'' शीर्षक पर अध्ययन किया। मुख्य निष्कर्ष निम्न प्रकार थे – 1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में लिंग के आधार पर सृजनात्मकता स्तर में अंतर पाया गया। छात्रों में सृजनात्मकता का स्तर अधिक पाया गया। 2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में क्षेत्रीयता के आधार पर सृजनात्मकता स्तर में कोई अंतर नहीं पाया गया। 3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में लिंग के आधार पर व्यावसायिक अभिरूचि में कोई अंतर नहीं पाया गया। 4. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में क्षेत्रीयता के आधार पर व्यावसायिक अभिरूचि में कोई अंतर नहीं पाया गया। 5. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं व्यावसायिक अभिरूचि में कोई सहसंबंध नहीं पाया गया। मिश्रा, नरेन्द्र प्रसाद (2010) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर ''गणितीय अभियोग्यता का छात्रों की व्यावसायिक प्राथमिकता के संदर्भ में अध्ययन'' शीर्षक पर अध्ययन किया। मुख्य निष्कर्ष निम्न प्रकार थे – 1. छात्र एवं छात्राओं की गणितीय अभियोग्यता में अंतर पाया गया। 2. छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक प्राथमिकता के अंतर्गत साहित्यिक एवं कृषि कार्य में अंतर पाया गया। 3. शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की गणितीय अभियोग्यता में अंतर पाया गया। 4. शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की व्यावसायिक प्राथमिकता के अंतर्गत कृषि कार्य एवं हाउस होल्ड कार्य में अंतर पाया गया। 5. छात्रों ने सर्वाधिक व्यावसायिक प्राथमिकता सामाजिक कार्यों को दी। 6. छात्रों ने सबसे कम व्यावसायिक प्राथमिकता संरचनात्मक कार्यों को दी। 7 . उच्च गणितीय अभियोग्यता के छात्रों ने सर्वाधिक व्यावसायिक प्राथमिकता में प्रशासकीय क्षेत्र का चयन किया एवं सबसे कम व्यावसायिक प्राथमिकता संरचनात्मक कार्य क्षेत्र को दी।

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य बनाए गए –

उद्देश्य

1. निजि माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि का अध्ययन करना।
2. राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि का अध्ययन करना।
3. ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि का अध्ययन करना।
4. शहरी क्षेत्रों में स्थापित माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि का अध्ययन करना।
5. माध्यमिक विद्यालयों में विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि का अध्ययन करना।
6. माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत महिला अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि का अध्ययन करना।

परिकल्पनायें

1. निजि माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. शहरी क्षेत्रों में स्थापित माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. माध्यमिक विद्यालयों में विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत महिला अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध की जनसंख्या के रूप में करनाल जिले के माध्यमिक स्तर पर कार्यरत विज्ञान एवं कला संकाय के अध्यापकों को लिया जायेगा।

न्यादर्श

न्यादर्श के रूप में 40 माध्यमिक विद्यालयों का चयन (10 विज्ञान संकाय तथा 10 कला संकाय) यादृच्छिक विधि से किया जायेगा

(विज्ञान संकाय तथा कला संकाय में से प्रत्येक प्रकार के विद्यालयों से 08–08 अध्यापकों का चयन (कुल 160 अध्यापकों का) यादृच्छिक विधि से किया जायेगा।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा जो शैक्षिक अनुसंधान के क्षेत्र मे सर्वाधिक व्यवहार में आती है।

प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत अध्ययन हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, 'टी' परीक्षण और सह संबधं को सांख्यिकी विधियों के रूप में प्रयुक्त किया जाएगा।

प्रयुक्त उपकरण

माध्यमिक स्तर के विज्ञान एवं कला संकाय के अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि, अभिरुचि तथा अभिवृत्ति का अध्ययन करने के लिए शोधकर्त्री निम्न परीक्षणों का प्रयोग करेगी :

- व्यावसायिक रुचि एव अभिरुचि के मापन के लिए एस.पी. कुलश्रेष्ठ द्वारा संरचित एवं प्रमाणीकृत (वोकेशनल इन्टरेस्ट रिकार्ड) (VIR-K) का प्रयोग किया जायेगा।
- व्यावसायिक अभिरुचि के मापन के लिए डॉ0 जे सी गोयल द्वारा संरचित एवं प्रमाणीकृत (टीचर एटीट्यूड स्केल) (TAS) का प्रयोग किया जायेगा।
- माध्यमिक स्तर की अभिवृत्ति मापन के लिए जय प्रकाश एवं आर.पी. श्रीवास्तव द्वारा संरचित एवं प्रमाणीकृत परीक्षण (टीचिंग एटीट्यूड टेस्ट) (T.A.T.-P.S.) का प्रयोग किया जायेगा।

अध्ययन की सीमायें

1. प्रस्तुत शोध हेतु माध्यमिक विद्यालयों का चयन केवल करनाल जिले से ही लिया जायेगा।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल माध्यमिक स्तर पर कार्यरत विज्ञानसंकाय एवं कला संकाय के अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि का ही अध्ययन किया जायेगा।

विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना संख्या 01 का परीक्षण

''निजि माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

प्रस्तुत परिकल्पना के परीक्षण हेतु 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया गया है जिससे प्राप्त परिणाम संख्या 01 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 1: निजि माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि का अध्ययन

व्यावसायिक रुचि	विज्ञान संकाय अध्यापक	कला संकाय अध्यापक
अध्यापकों की संख्या	80	80
माध्य	41.61	41.80
मानक विचलन	5.287	5.493
प्रमाप विभ्रम	0.537	
'टी' मूल्य	0.343	

तालिका संख्या 01 से स्पष्ट है कि निजि माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि में विज्ञान संकाय अध्यापकों का माध्य 41.61 तथा कला संकाय अध्यापकों का माध्य 41.80 प्राप्त हुआ है। जबकि विचलन मान क्रमशः 5.287 तथा 5.493 प्राप्त हुए है। दोनो समूहों के मध्यमानों की तुलना करने पर 'टी' मूल्य 0.343 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर सार्थक है। अतः शोध कार्य पूर्व बनाई गई शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

तालिका संख्या 01 से स्पष्ट है कि निजि माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि के मध्य सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना संख्या 02 का परीक्षण

''राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

प्रस्तुत परिकल्पना के परीक्षण हेतु ''टी'' मूल्य परीक्षण का प्रयोग किया गया है। जिसके परिणाम तालिका संख्या 02 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 2: राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि का अध्ययन

व्यावसायिक रुचि	विज्ञान संकाय अध्यापक	कला संकाय अध्यापक
विद्यार्थियों की संख्या	80	80
माध्य	41.56	41.90
मानक विचलन	5.312	5.497
प्रमाप विभ्रम	0.549	
'टी' मूल्य	0.610	

तालिका संख्या 2 से स्पष्ट है कि राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि परीक्षण में प्राप्त किए गए विज्ञान संकाय अध्यापकों के अंको का माध्य का 41.56 तथा कला संकाय अध्यापकों का माध्य 41.90 प्राप्त हुआ है जबकि प्रमाणिक विचलन के मान क्रमशः 5.312 तथा 5.497 प्राप्त हुए है। दोनो समूहों के माध्यों की तुलना करने पर 'टी'' मूल्य 0.610 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता के स्तर 0.05 पर सार्थक है। अतः शोध कार्य से पूर्व बनायी गयी शून्य परिकल्पना ''राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' अस्वीकार की जाती है। और कहा जा सकता है कि राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि के मध्य सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना संख्या 03 का परीक्षण

''ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

प्रस्तुत परिकल्पना के परीक्षण हेतु 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया गया है जिससे प्राप्त परिणाम संख्या 03 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 3: ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि का अध्ययन

व्यावसायिक रुचि	विज्ञान संकाय अध्यापक	कला संकाय अध्यापक
अध्यापकों की संख्या	80	80
माध्य	41.61	41.80
मानक विचलन	5.287	5.493
प्रमाप विभ्रम	0.537	
'टी' मूल्य	0.343	

तालिका संख्या 03 से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि में विज्ञान संकाय अध्यापकों का माध्य 41.61 तथा कला संकाय अध्यापकों का माध्य 41.80 प्राप्त हुआ है। जबकि विचलन मान क्रमशः 5.287 तथा 5.493 प्राप्त हुए है। दोनो समूहों के मध्यमानों की तुलना करने पर 'टी' मूल्य 0.343 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर सार्थक है। अतः शोध कार्य पूर्व बनाई गई शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है। अतः शोध कार्य से पूर्व बनायी गयी शून्य परिकल्पना ''राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' अस्वीकार की जाती है। तथा कहा जा सकता है कि राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि के मध्य सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना संख्या 04 का परीक्षण

''शहरी क्षेत्रों में स्थापित माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

प्रस्तुत परिकल्पना के परीक्षण हेतु 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया गया है। जिससे प्राप्त परिणाम तालिका संख्या 04 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4: शहरी क्षेत्रों में स्थापित माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि के अन्तर का अध्ययन

व्यावसायिक रुचि	विज्ञान संकाय अध्यापक	कला संकाय अध्यापक
अध्यापकों की संख्या	80	80
माध्य	132.92	133.97
मानक विचलन	13.439	12.388
प्रमाप विभ्रम	1.292	
'टी' मूल्य	0.19	

तलिका संख्या 04 से स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्रों में स्थापित माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि परीक्षण में विज्ञान संकाय अध्यापकों का माध्य 132.92 तथा कला संकाय अध्यापकों का माध्य 133.97 प्राप्त हुआ है। जबकि प्रमाणिक विचलन का मान क्रमशः 13.439 तथा 12.388 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मानों की तुलना करने पर 'टी' मूल्य 0.19 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता के स्तर 0.05 पर सार्थक है।

अतः शोध कार्य से पूर्व बनाई गई शून्य परिकल्पना '' शहरी क्षेत्रों में स्थापित माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' अस्वीकार की जाती है तथा कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्रों में स्थापित माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि के मध्य सार्थक अन्तर होता है।

परिकल्पना संख्या 05 का परीक्षण

''माध्यमिक विद्यालयों में विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

प्रस्तुत परिकल्पना के परीक्षण हेतु 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया गया है। जिससे प्राप्त परिणाम तालिका संख्या 05 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 5: माध्यमिक विद्यालयों में विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि का अध्ययन करना

व्यावसायिक रुचि	विज्ञान संकाय अध्यापक	कला संकाय अध्यापक
अध्यापकों की संख्या	80	80
माध्य	41.61	41.80
मानक विचलन	5.287	5.493
प्रमाप विभ्रम	0.537	
'टी' मूल्य	0.343	

तालिका संख्या 05 से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि में विज्ञान संकाय अध्यापकों का माध्य 41.61 तथा कला संकाय अध्यापकों का माध्य 41.80 प्राप्त हुआ है। जबकि विचलन मान क्रमशः 5.287 तथा 5.493 प्राप्त हुए है। दोनो समूहों के मध्यमानों की तुलना करने पर 'टी' मूल्य 0.343 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर सार्थक है।

अतः शोध कार्य पूर्व बनाई गई शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

तालिका संख्या 05 से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि के मध्य सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना संख्या 06 का परीक्षण

''माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत महिला अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

प्रस्तुत परिकल्पना के परीक्षण हेतु 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया गया है जिससे प्राप्त परिणाम संख्या 06 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 6: माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि का अध्ययन

व्यावसायिक रुचि	विज्ञान संकाय अध्यापक	कला संकाय अध्यापक
अध्यापकों की संख्या	80	80
माध्य	41.61	41.80
मानक विचलन	5.287	5.493
प्रमाप विभ्रम	0.537	
'टी' मूल्य	0.343	

तालिका संख्या 06 से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान संकाय एवं कला संकाय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि में विज्ञान संकाय अध्यापकों का माध्य 41.61 तथा कला संकाय अध्यापकों का माध्य 41.80 प्राप्त हुआ है।

जबकि विचलन मान क्रमशः 5.287 तथा 5.493 प्राप्त हुए है। दोनो समूहों के मध्यमानों की तुलना करने पर 'टी' मूल्य 0.343 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर सार्थक है। अतः शोध कार्य पूर्व बनाई गई शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

शैक्षिक महत्व

प्रस्तुत की गई शोध प्रक्रिया से भावी शोध की निम्न सम्भावनाये प्रलिक्षित होती है–ः

इस शोध अध्ययन से व्यावसायिक रुचि के विविध उल्लेखित अन्य आयामों के संदर्भ में विस्तृत एवं गहन शोध का मार्ग प्रशस्त होता हैं। व्यावसायिक रुचि से जुड़े विभिन्न प्रत्ययों के शोध का आधार पर अध्यापकों, छात्रो, प्रशिक्षिणार्थियों के अतिरिक्त अन्य स्तर के शिक्षार्थियों के व्यावसायिक रुचि एवं अभिरुचि तथा अभिवृत्ति का आंकलन किया जा सकता है। व्यावसायिक रुचि के संदर्भ में प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर प्रशिक्षिणार्थियों की अभिवृति का आंकलन का तत्सम्बन्धी नवीन शोध प्रस्तुत किया जा सकता है।

सन्दर्भ

1. कुमार (2015), "वेल्लोर जिले में कॉलेज के छात्रों के वैज्ञानिक रुचि का उनके लिंग, संस्था के प्रकार, शैक्षिक योग्यता, जन्म क्रम के संबंध में एक अध्ययन", इंटरनेशनल जनरल ऑफ एप्लाएड रीसर्च, वाल्यूम.1(3), पी0पी0–29–31।
2. पटेल (2012) "माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के वैज्ञानिक दृष्टिकोंण और रुचि का कुछ चरों के संबंध में एक अध्ययन" इंटरनेशनल इंडेक्सड एण्ड रैफरर्ड जनरल, वाल्यूम. 4,इश्यू–39, पी0पी0–61–65।
3. गोयल, उपविजय (2012), किशोरों की व्यावसायिक रूचि बनाने में अभिभावकों की प्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन, लरनिंग कम्युनिटी, वाल्युम–3, नई दिल्ली पब्लिशर, नई दिल्ली, पृष्ट–121।
4. डोनगांवकर, निशा (2010) ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का उनकी व्यावसायिक अभिरुचि के संदर्भ में अध्ययन'' शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,रायपुर, छत्तीसगढ़ प्रकाशन, क्रियात्मक , अनुसंधान शोध एवं नवाचार प्रभाग, लघु शोध सारांश संकलन, सत्र 2009–10 ।
5. मिश्रा, नरेन्द्र प्रसाद (2010), ''गणितीय अभियोग्यता का छात्रों की व्यावसायिक प्राथमिकता के संदर्भ में अध्ययन'' शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,रायपुर, छत्तीसगढ़ प्रकाशन, क्रियात्मक , अनुसंधान शोध एवं नवाचार प्रभाग, लघु शोध सारांश संकलन, सत्र 2009–10 ।